मेरा पन्ना

बीजू की शैतानी

मेरे घर के ऊपर की मंज़िल में अंकल और आँटी रहते हैं। वे हमारे मकान मालिक हैं। बीजू उनका पालतू कुत्ता है। वह सफेद और काले रंग के धब्बों वाला प्यारा कुत्ता है। वह एक दिन हमारे घर के अन्दर घुस गया था। किचन में हरे रंग की झाड़ू पड़ी थी। बीजू ने उसको सूँघना शुरू किया फिर मुँह में दबाकर ऊपर की ओर भागा।

मैं और मेरी दीदी ने उसको बहुत रोका लेकिन वह नहीं माना। उसे हरे रंग की झाड़ू पसन्द आ गई थी। वह झाड़ू को मुँह में दबाकर छत पर चला गया।

जब वह भागते-भागते थक गया तो झाड़ू के साथ सो गया। जैसे ही मैंने झाड़ू को उठाना चाहा वह जग गया और मेरे ऊपर भौंकने लगा।

फिर अंकल आ गए और उन्होंने मुझसे झाड़ू लेकर उसे सीढ़ियों पर रख दिया। अंकल के आने के बाद बीजू शान्त होकर बैठ गया।

कहानी व चित्रः अंकुश झा, तीसरी, भोपाल, म. प्र.

मेरे पापा का जहाज़

मेरे पापा का जहाज़।
देखा तो इतना विशाल!!
तैरता पानी पर कैसे?
लोहे का जहाज़।
लहरों पर ऊपर नीचे
हिचकोले खाता जहाज़।
मेरे पापा का जहाज़!!

कविता व चित्रः अपूर्व सोमंची, तीसरी

सृष्टि सहाय, पाँचवीं, उदयपुर, राजस्थान

सूरज बामनिया, चौथी, देवास, म. प्र.

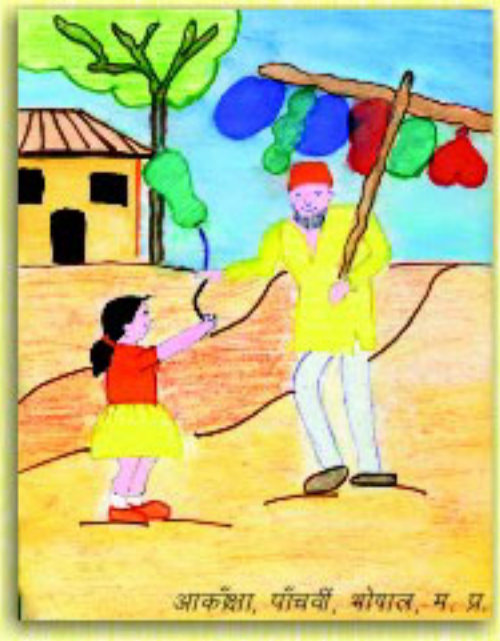

आकांक्षा, पाँचवीं, भोपाल, म. प्र.

मेरी सत्यकथा

एक बार मैं नदी पर नहाने गया। मैं बिना सोचे-समझे नदी में कूद गया। मैं जिस जगह कूदा वहाँ पर बहुत गहरा था। मुझे तैरना नहीं आता था। इस कारण मैं नदी में डूबने लगा। मैंने चिल्लाने की बहुत कोशिश की किन्तु मैं चिल्ला नहीं पाया। मेरी मौसी की लड़की ने मुझे बचाने के लिए कई प्रयत्न किए, किन्तु असफल रही। वहाँ पर एक पागल नहा रहा था। मेरी दीदी ने उसे मुझे बचाने के लिए कहा, किन्तु उस पागल ने मेरी दीदी की एक न सुनी। मेरी दीदी बहुत देर तक चिल्लाती रही। तब एक विचित्र बात हुई। वह पागल मुझे बचाने के लिए नदी में आया किन्तु वह तैर नहीं रहा था। मुझे ऐसा लगा जैसे वो पानी पर ज़मीन की तरह चल रहा हो। उस पागल ने मुझे वहाँ से निकालकर किनारे पर एक गड्ढे में लाकर छोड़ दिया। मेरी दीदी ने चादर से मुझे बाहर निकाला। फिर मैं घर पर आया। वह दिन मुझे आज तक याद है।

अर्जुन सिंह डाबी, उज्जैन (म.प्र.)